SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

इक्कीसवीं सदी की महिला साहित्यकार

शिप्रा द्विवेदी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शताक्षी त्रिपाठी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट), महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
शिप्रा द्विवेदी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शताक्षी त्रिपाठी, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट),
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 18/08/2021
Plagiarism : 00% on 12/08/2021

शोध सार

साहित्य जब तक मौखिक परम्परा का हिस्सा था तक तक लेखन में स्त्रियों का योगदान बराबरी के स्तर पर रहा, परन्तु इतिहास के पन्नो पर उनका जिक्र भी नही है। आज के दौर में महिंलाओं के अंदर बढ़ती चेतना और जागरूकता ने पारंपरिक छवि को तोड़ा है। यद्यपि महिला लेखन आज के इस स्पर्धा के युग में एक चुनौती है फिर भी उसे हर स्थिति का सामना करने के लिए किसी वैशाखी की जरूरत नहीं है, बल्कि वह स्वयंसिद्धा बनकर अपनी राह बना रही है।

अत्यंत संयमित व शालीन बने रहकर सृजन करना भी अपने आप में एक चुनौती है महिला रचनाकार ऐसा करती आ रही है। निर्भयतापूर्वक सोचना और लिखना होगा यह आज भी जरूरत है। समसामयिक बाल में नारी समता की एक नई चेतना भारतीय समाज में व्याप्त हुई है। बहुत प्रसन्नता की बात है कि स्त्री लेखन की चर्चा अब हर जगह होने लगी है। यह निश्चय ही महिला रचनाकारों के बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है। आज के दौर में भारतीय संस्कृति में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह वो सभी कार्य कर सकती है जो एक पुरूष कर सकता है, वह एक पुरूष के समान उससे अधिक कार्य कर सकती है और करती भी है।

मुख्य शब्द

महिला साहित्यकार, 21 वीं सदीं, सामाजिक संघर्ष.

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में सन् 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया। अब तक बहुत सी महिलाये घर की देहरी लांघकर बाहर आ चुकी थी। अलग अलग क्षेत्र में अपने जौहर दिखा चुकी थी। लोग उम्मीद लगा चुके थे कि आने वाली सदी में जाने क्या करतब दिखायेंगी ये महिलाये। बीसवीं सदी के अंत में ये

जुमले मशहूर हो रहे थे कि" इक्कीसवीं की स्त्री "इक्कीसवीं सदी की औरत" ऐसा लगता था कोई धमाकेदार नेट प्रोग्राम डाउनलोड होने वाला है और किसी क्षेत्र में हुआ हो या ना हुआ हो महिला कथा लेखन ने बीसवीं सदी की मृगमारीचका से लगते आयाम को सच ही छू लिया है, अपना एक इतिहास रचा है।

पुरुष व्यवस्था स्त्री को दोयम दर्जे की नागरिक करार करते हुए जिस दृष्टि से देखता है उसी का पर्याय बन गई थी। बीसवीं सदी के उतर्रार्ध में सुधा अरोड़ा की कहानी (रहोगी तुम वही) इस सदी का मूल स्वर था, मै जीना चाहती हूँ। ये शीर्षक डॉ. नीलिमा सिन्हा की कहानी का है जिसकी नायिका के पति को एड्स है, सास बार बार रात में उसे उसके कमरे में भेजती है, लेकिन वह जीने का फैसला करती है। यही स्वर लगभग हर कथा लेखिका की लेखनी में धड़कता दिखाई देता है। वैसे भी स्त्री कलम कथाओं में जाने अनजाने स्त्री विमर्श रच डालती है क्योंकि किसी भी स्त्री की इससे अलग परिभाषा कहाँ है?

बीसवीं सदी की आदि कथाकार प्रेमचंद जी की पत्नी शिवरानी, सुभद्रा कुमारी सिन्हा, सुभद्रा कुमारी चौहान व महादेवी सहित भी स्त्री विमर्श को रचने से अछूता कैसे रह सकता था? बीसवीं सदी के उतर्रार्ध से स्त्री लेखन ने जो प्रगति की है उससे इक्कीसवीं सदी तक आते आते कोई विषय अछूता नही रहा है। कथादेश में प्रकाशित कहानी "तू पन कहाँ जायेगी?" नीलम कुलश्रेष्ठ, का आरंभ एक रेलवे लाइन के किनारे शौच करती एक कचरा बीनने वाली स्त्री से आरंभ होता है, जो कि एक सायकल वाले को गाली दे रही है। ये उसे खुले में शौच करते सायकल रोककर घूर रहा है। नही पता था कि ये समस्या पंद्रह वर्ष पश्चात् शौचालय बनाने का राष्ट्रीय मुद्दा बन जायेगी।

इक्कीसवीं सदी के आरंभ में मुक्त स्त्री विमर्श से प्रेरित कहानियों का दौर रहा। एक नई पीढ़ी उभरी जो अभिव्यक्ति में बेझिझक थी, ईमानदार थी जिनके लिए चित्रा मुदगल जी ने कलमकार फाउंडेशन, दिल्ली के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में स्वीकारा था कि, "हमने जब लिखना आरम्भ किया था तो मुठ्ठी भर कहानीकार ही थी। आज तो लेखिकाओं का झुण्ड का झुण्ड कहानियाँ लिख रहा है। बड़ी बेबाकी से देह की चीर फाड़ कर रहा है।"

उक्त कार्यक्रम की उद्घोषिका गीताश्री ने भावुक होकर कहा था। "और ऐसी लेखिकाएं गालियाँ भी तो खा रही है।"

कहना ना होगा इस वर्ग में रमणिका गुप्ता जी, मैत्रेयी पुष्पा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोनाली सिंह, जयश्री रॉय को लिया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा जी ग्रामीण स्त्रियों की अनकही बातों को साहित्य के माध्यम से बहुत सशक्तता से इसी के केंद्र में लेकर आईं। मनीषा कुलश्रेष्ठ व जयश्री राय कहानी में एक मोहक वातावरण रचने में सिद्धहस्त हैं। यदि हम अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की बात करते हैं तो रायपुर में रमणिका जी व मैत्रेयी जी का एक साहित्यिक अपमान भर्त्सना की बात है सिर्फ इसलिए कि वे बेबाकी से स्त्री कामनाओं को चित्रित करतीं हैं? वडोदरा की एक गुजराती कवयित्री ने भी मुझसे कहा था कि हमें गुजराती साहित्य की गोष्ठी में प्रेम कविता पढ़ने से मना किया जाता है जबकि हम जानते हैं गुजरात कितना प्रगति शील राज्य है। इस बात की चर्चा इसलिए जरूरी हो गई है कि स्त्री को अपनी स्त्री सुलभ भावनाओ को अभिव्यक्त करने का अधिकार नहीं है। जो जबरन ये अधिकार छीन रही है, उनकी कहानियों की बोल्डनेस को या स्त्री देह से जुड़े सत्य को खुले मन से साहित्य में स्थान देना होगा लेकिन बिना बात अश्लीलता भी स्वीकार्य नहीं होगी।

कहानीकार अलग अलग व्यवसायिक क्षेत्र से जुडी होने के कारण अलग अलग विषयों पर लेखनी चला रही है जैसे लेस्बियन समस्या, उदाहरण के लिए संगीता कांदली की 'कथादेश' में प्रकाशित कहानी (फीनिक्स) व नीलिमा सिन्हा की 'हंस' में प्रकाशित (मंगला गौरी) एम एन सी में किसी प्रबंधन कार्य करते हुए किसी मुस्लिम से प्रगाड़ता तो दूसरे सहकर्मियों का जलना या जताना कि हम तुम्हें इस मुस्लिम से बचाकर रहेंगे, पर्यावरण सरंक्षण की बात करना। हंस में प्रकाशित सफाई उन कहानियों का आरम्भिक काल थी जब से कथाओं में पर्यावरण चेतना का संचार हुआ था। इस सदी की कहानियों की विवधता में अपनी दो कहानियों का नाम लेना चाहूँगी सरोगेट मदर की मर्मांतक तकलीफ पर आधारित (रस प्रवाह) व (गिनी पिग्स) जो सन २०१० में लिखी क्लीनिकल ट्रायल की हिंदी की प्रथम कहानी भी हो सकती है कि किस तरह मनुष्यों को क्लीनिकल ट्रायल के नाम से मौत दी जाती है। यदि वे दवाई

के प्रयोग के कारण भयंकर बीमार हो जाए तो अनुबंध के अनुसार उन्हें दवाई कंपनियां पैसा भी नहीं देती। आलोचकों की नजर ऐसी कहानियों पर कम पड़ती है या यों कहिये नौ–दस वर्ष पूर्व स्त्री पुरुष के रसीले संबंधों का ही अधिक दौर था इसलिए समाज के विभिन्न पहलुओं पर लिखी कहानियाँ, कहानीकार आलोचकों की सूची में जगह नहीं बना पाईं।

हिन्दी साहित्य में लेखिकाओ की कहानियों को अलग अलग रेखांकित ना करके मैं इस सदी की कुछ ऐतहासिक घटनाओं को ले रही हूँ, जिससें इक्कीसवीं सदी का महिला कहानियों का परिद्रश्य परिलक्षित हो जायेगा। अब तक का सबसे बड़ा संकल्प है रमणिका गुप्ता जी का, जो चालीस भाषाओं की रचनाकरो की स्त्री विमर्श की रचनाये हिन्दी में अनुवादित करके "हाशिये उलांघती औरत से उन कटु सत्यों को कहलवा रही है कि औरत को हाशिये उलांघने की क्यों जरूरत पड़ती है। इस श्रंखला के हिन्दी के तीन व ग्यारह भाषाओं के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

बीसवीं सदी में श्री यशपाल जी ने ओ भैरवी में लिखा था, मुझे आधुनिक शिक्षित स्त्रियों को देखकर बहुत हंसी आती है कि इनके आदर्श आज भी सीता और सावित्री हैं। खुशखबरी ये है कि बिना यशपाल जी के विचार जाने भारत भर में रचनाकार पौराणिक स्त्री पात्रों की चीर फाड़ कर रही हैं .."सीता द्रौपदी व अन्य पौराणिक स्त्री चरित्रो की वेदना से सदियों से भारतीय स्त्रियों का दिल चकनाचूर होता रहा है। जैसे ही उनके हाथ में कलम आई इस तकलीफ व विद्रोह को स्वर मिलने लगे।

अस्मिता, महिला बहुभाषी मंच की वड़ोदरा की अरविंद आश्रम की गोष्ठियों में मैंने इस विद्रोह की धड़कने सुनी व नमिता सिंह जी के प्रोत्साहन पर मैंने देश भर की शीर्षस्थ लेखिकाओ से रचनायें मँगवा कर पुस्तकें संपादित की। धर्म की बेड़ियाँ खोल रही है, औरत शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, व धर्म के आर पर औरत "किताबघर, दिल्ली, यदि स्त्री की तेज धार वाली कलम के पौराणिक स्त्री चरित्रो व धर्म के स्त्री शोषण के चक्रव्युह में धँस जाने व अपना शौर्य दिखाने को देखना हो तो इस सदी में की विशिष्ट कहानियां हैंः वेंकटासनी व नारियों महाश्वेता देवी, जो आंध्र प्रदेश में पिता व भाइयों की मर्जी से पुजारियों के धर्म के नाम पर कमसिन लड़कियों शोषण की कहानी है। कोख नमिता सिंह, कटाक्ष इक्कीसवीं सदी की महिला साहित्यकार, म्रदुला गर्ग संगसार नासिरा शर्मा मेनका रमणिका गुप्ता नेपथ्य अर्चना सिंह "धर्म की बेडिया खोल रही है औरत" का दूसरे खंड मे कहानियां हैं। भीष्म पितामह से हाशिये की स्त्री की तरह प्रश्न करती हिडिम्बा एक और प्रश्न नताशा अरोड़ा, गार्गी के याज्ञवल्क्य को कोंचते प्रश्न परिप्रेक्ष्य में केयर ऑफ स्वात घाटी "मनीषा कुलश्रेष्ठ'' मंदिरों के मठाधीशों की पोल खोलती दास्तान –ए कबूतर कुसुम अंसल, पौराणिक स्त्री शोषण की कथाएं ओघवती अन्य और विषकन्याएं संतोष श्रीवास्तव, जीवन से पलायन सार्थक है जीवन को निभाना योगक्षेम सुषमा मुनींद्र वासवदत्ता एक गणिका? डॉ. मीरा रामनिवास, कहना ना होगा कि इस सदी की स्त्री कलम अपने अतीत या पौराणिक आख्यानों में स्त्री की स्थिति की पड़ताल कर स्वयं अपने रास्ते तलाश रही है।

इस सदी में तीसरा ऐतहासिक संगठित स्त्री लेखन साहित्यिक इतिहास रचा इसी बात को मद्दे नजर रखते हुए कमर मेवाड़ी जी की पत्रिका संबोधन ने स्वाति तिवारी के संपादन में लिव–इन रिलेशनशिप पर एक विशेषांक प्रकाशित किया। आज की महानगरों में लिव–इन में रहने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन की जरूरत है। इस सदी में लिखी इन कहानियों ने इस सम्बन्ध का भरपूर विवेचन किया है कि जब दो लोग साथ रहते है तो किस तरह समय पर कोई रिश्तेदार साथ नहीं होता या इस तरह के रिश्ते में कानून बन गया हो तब भी स्त्री असुरक्षा महसूस करती है। इस अंक की ये उपलब्धि रही कि अनेक लेखिकाओ ने जोर दिया कि जब लिव–इन के लिये शादी के कानून खंगालने पड़ रहे हैं तो शादी ही एक पुरुष व स्त्री के साथ रहने की व्यवस्था क्या बुरी है?

इसी सदी मे लिखी गई किरण सिंह ने एक दुर्लभ कहानी, द्रौपदी पीक हंस जिसे पढ़कर में सोचती रह गई कि इतनी सशक्त, इतनी क्लिष्ट, इतनी विषमताओं को समेटती ऐसी कहानी कोई कैसे लिख सकता है। इसमे है रसूलपुर की नाचने वाली की समस्या, नागा बनाने की प्रक्रिया, उनकी अंदरूनी घृणित राजनीति। पर्वतों पर खाली

टीन के डिब्बे व प्लास्टिक थैली व रेपर्स फेंककर पर्यावरण दूषित करते लोग हैं। दूसरी राजनीति मल्टी नेशनल कंपनियों की घृणित साजिश –उनके विज्ञापन, जिससे लोग द्रौपदी पीक यानि कि माउंट एवरेस्ट की यात्रा पर जाने के एडवेंचर को भोगने लालायित हो और उनका पर्वतारोहण के लिए जरूरी सामान बिके। जिस यात्रा से पहले यात्री से लिखवा लिया जाता है कि यदि वह मर गया तो उसके शव को धुंढ़कर उसके घरवालों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी प्रशासन की नही है। मेरे ख्याल से ये अकेली ऐसी कहानी होगी जिसके प्रकाशन के तुरंत बाद हंस में इस पर २–३ पृष्ठ का लेख प्रकाशित हुआ था।

नई पीढ़ी की योगिता यादव, आकांक्षा पारे, इन्दिरा नाग, व सिनीवाली शर्मा, डॉ. नीरज शर्मा, अंजु शर्मा की कहानियों का वातावरण व शैली का बिलकुल अपना अंदाज है। योगिता की कहानी क्लीन चिट में इंदिरा गांधी जी की हत्या के बाद सरदार परिवारों की विधवाओं का वर्णन है। हत्यारों को किस तरह क्लीन चिट दे दी जाती है। इंद्रप्रस्थ भारती के वार्षिक अंक में प्रकाशित सिनीवाली की कहानी करतब बायस बहुत चौंकाती है क्योंकि इसमें एक भी स्त्री पात्र नहीं है व ये गाँव के चुनावी वातावरण को पाठकों के सामने आंचलिक भाषा के शब्दों सहित जीवंत कर देती है। इस कहानी की तारीफ मैत्रेयी जी ने भी की है। हुस्न तब्बसुम निहां जैसे कि मुस्लिम स्त्रियों की समस्यायों के विषय में तो दुनिया को बता ही रहीं हैं, साथ में उन्होंने हिंदी साहित्य को कुछ सार्थक कहानियां भी दीं हैं।

निष्कर्ष

इस सदी की युवा कहानीकार पीढ़ी खुशनसीब है क्योंकि अनेक पुरस्कार योजनाएं हैं जो प्रोत्साहित कर रहीं हैं। कहानी लेखन एक सोद्देश्य कार्य है। कभी कभी मुझे लगता है कि इस सदी में शायद ही कोई किरण सिंह द्रौपदी पीक जैसी कहानी लिख पाये, लेकिन मानदंड तो टूटते ही हैं। आज जो महिलायें लिख रही है उनके लिए नेट पर लिखने के द्वार खुल गए हैं। पिछली पीढ़ी ने जो संपादकों की मानसिकता व राजनीति झेली है उससे ये स्त्री मुक्त है। मनचाहा नेट पर लिख रहीं हैं या कहिये सौ प्रतिशत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सुख भोग रहीं हैं। उस दवाब से मुक्त ये कितने ऊँचे मानदंड स्थापित करेंगी कौन जाने अभी तो आधी सदी भी नही गुजरी है।

संदर्भ सूची

1. अरोड़ा, सुधा, रहोगी तुम वही, *www.hindismsy.com*।
2. कुलश्रेष्ठ, नीलम, तू पन कहाँ जायेगी, *कथादेश*, 2010 दिसम्बर।
3. सिन्हा, नीतिमा, मंगला गौरी, *हंस* में प्रकाशित, 2010 जुलाई।
4. लता, चंद्र, बैलेंस शीट, *Hindi pratillipi.com* 18.02.2020 को पाठित। सं. रमणिका गुप्ता।
5. पद्मा, कुप्पली, आयोनि, *''हाशिये उलाँघती औरत'',* साहित्य अकादमी सितम्बर 2013।
6. ताश की बाजी *Hindi pratillipi.com* 19.02.2020 को पाठित।
7. *ओ भैरवी यशपाल प्रतिनिधि काहानियाँ,* राजकमल प्रकाशन 2016।
8. कुलश्रेष्ठ, नीलम, धर्म की बेड़ियों–बेड़ियों खोल रही औरत, मेघा पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 2014 नई दिल्ली।
9. कुलश्रेष्ठ, नीलम, धर्म की बेड़ियों–बेड़ियों खोल रही औरत, (खण्ड 2), न्यू पब्लिशिंग 2018 नई दिल्ली।
10. सिंह, किरण, 'द्रोपदी पीक', *हंस* अक्टूबर 2015 ।
11. यादव, योगिता, 'क्लीन चिट', *हंस* दिसम्बर 2017।

****